# चारा एवं पशुधन उत्पादन के सामाजिक एंव आर्थिक पहलू

डॉ.साधना पाण्डेय

पशुपालन में चारे का योगदान अनुकरणीय है। आज अनाज के क्षेत्र में हमने आत्मनिर्भर होने की सफलता प्राप्त कर ली है, किन्तु चारे की समस्या आज भी जटिल एवं गम्भीर बनी हुई है। हमारे देश में पशुओं की संख्या संसार के पशुओं की संख्या का लगभग 20 प्रतिशत है। लेकिन इन पशुओं को भरपेट संतुलित आहार एंव चारा मुश्किल से ही मिल पाता है। इसका मुख्य कारण है खाद्यान्न की बढ़ती मांग और चारे के आधीन भूमि का बहुत कम प्रयोग। हमारे देश में कुल कृषि भूमि के 4.4 प्रतिशत क्षेत्र में हरा चारा उगाया जाता है। जो कि अब घटकर 3.3 प्रतिषत रह गया है। इस सीमित चारा क्षेत्र और देश में पशुओं की बढ़ती दिन प्रतिदिन वृद्धि के कारण चारे की उन्नत किस्में विकसित करके उत्पादकता को बढ़ाया जाना अति आवश्यक हो गया है।

**उत्पादकता को प्रभावित करने वाले सामाजिक एंव आर्थिक कारण :**

**हरे चारे की कमी :**

प्रायः जानवरों के लिये चारे की कमी होती जा रही है। अतः आवश्यकता है कि हरे चारे के उत्पादन को अधिकाधिक बढ़ाया जाये। मुख्यतः खरीफ में हरा चारा बहुतायत में होता है, तत्पश्चात् रबी में एवं जायद में बहुत कम चारा होता है। अतः अधिक उत्पादकता वाले मौसम में हरे चारे को उगाकर इसे उचित संरक्षण विधियों द्वारा आगे के समय के लिये सुरक्षित रख लेना चाहिए। फीड ब्लाक, बेल्स एवं लीफमील आदि तैयार करके इन्हें आसानी से अधिक उत्पादकता वाले क्षेत्रों से कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों में भेजा जा सकता है।

**सूखे चारे की कमी :**

जैसे–जैसे कृषि उत्पादकता में कमी होती जा रही है वैसे ही सूखे चारे की भी कमी होती जा रही है। इसी कारण जानवरों को बांध कर खिलाना और भी कम होता जा रहा है। तथा ज्यादातर जानवर चराई पर ही निर्भर हो रहे हैं। उत्पादन के साथ–साथ सूखे चारे की गुणवत्ता में भी काफी कमी आई है। निम्नस्तर के चारे में पषुओं को नुकसान पहुंचाने वाले तत्व होते हैं तथा इसका पाचन भी बहुत धीमी गति से होता है। इसे दूर करने के लिए सूखे चारे को विभिन्न विधियों का प्रयोग करके सुपाच्च बनाया जा सकता है। जैसे कुट्टी करना, पानी में भिगोना, भाप के द्वारा, यूरिया का प्रयोग, रसायनिकों के प्रयोग द्वारा एंव अधिक गुणवत्ता वाले चारे के साथ मिलाना आदि।

**अनियंत्रित चराई :**

चूंकि सूखे चारे एवं हरे चारे की कमी होती जा रही है इसलिये ज्यादातर किसान भाई चराई द्वारा ही जानवरों का पेट भर रहे हैं। अत्यधिक चराई होने के कारण हमारे प्राकृतिक चरागाह धीरे धीरे कम हो रहे हैं एवं बंजर भूमि में बदलते जा रहे हैं। इस प्रकार आवश्यक/ उचित चारा न उपलब्ध होने के कारण जानवरों की उत्पादकता भी कम होती जा रही है। चरागाहों के कम होने से हरा चारा भी कम होता जा रहा है।

घटती कृषि उत्पादकता, जंगल के पास घर होना, कृषि योग्य भूमि का आकार छोटा हो जाना, एवं दूध तथा चारे हेतु बाजार तक किसानों की पहुंच न होना ही अनियंत्रित चराई के प्रमुख कराण हैं।

**निम्न उत्पादकता वाले जानवर :**

प्रायः जानवरों को मुख्य फसलों के बाई प्रोडक्टस ही किसानों द्वारा खिलाये जाते हैं। जिनमें आवश्यक तत्वों की भारी कमी होती है ऐसी परिस्थितियों में निम्न अथवा मध्यम श्रेणी के जानवर ही उत्पादक सिद्ध होते हैं। अतः ऐसी परिस्थितियों में उच्च नस्ल वाले जानवर रखना नामुमकिन होता है। इस प्रकार से निम्न स्तर का चारा एवं चरागाह, तीव्र ग्रीष्म, सुपाच्य तत्वों की कमी , चारे की अनुपलब्धता, खड़े एवं रेशेदार चारे का प्रयोग ही जानवरों की निम्न उत्पादकता के प्रमुख कारण हैं।

**खनिज लवणों की कमी :**

ज्यादातर खेती योग्य भूमि की मृदा में आवश्यक खनिज पदार्थों की कमी होती जा रही है जिसके कारण इसके उगाये गये चारे में भी खनिज तत्व कम होते हैं। जिससे जानवरों को आवश्यक खनिज लवण प्राप्त नहीं हो पाते हैं। खनिज तत्वों की कमी कम सुपाच्च भोज्य तत्वों की क्रियाशीलता को कम कर देती है। साथ ही दुग्ध उत्पादन में कमी, अनियमित प्रजनन क्षमता, निम्न उत्पादकता, एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें भी इसी कारण से उत्पन्न हो जाती हैं। अतः आवश्यक है कि किसान भाई अलग से मिनरल मिक्सचर (खनिज लवण) चारे में मिलाकर जानवरों को खिलायें।

**जन सहभागिता अभियान के क्रियान्वयन में कमी :**

जंगलों को बचाने के लिए एवं इनमें अनियंत्रित चराई बंद करने के लिये वन विभाग द्वारा चलाये जा रहे जन सहभागिता अभियान को अभी भी बहुत सी जगहों पर कड़ाई से पालन नहीं किया जा रहा है। इस अभियान का उचित अनुपालन करके जंगलों में अनियंत्रित चराई को रोका जा सकता है।

**पशुओं का खराब स्वास्थ :**

ज्यादातर जानवर खुरपका–मुंहपका, फड़सूजा तथा गलघोटू से ग्रसित हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त बाह्य एवं अंतः परजीवी भी जानवरों को भारी क्षति पहुंचाते हैं। वाह्य परजीवी जैसे–जू आदि .तथा अन्तः परजीवी जैसे– पेट में कीड़े (फीताकृमि,गोलकृमि) तथा जानवरों में थनैला रोग भी बहुत पाया जाता है। किसान भाईयों की टीकाकरण के बारे अनभिज्ञता इन बीमारियों का प्रमुख कारण है। अतः वर्षा ऋतु से पहले ही जानवरों का टीकाकरण अवश्य करा लेना चाहिये। साथ ही जानवरों के आसपास स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिये।

**कृषि जोतों का छोटा होना :**

तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या एवं एकाकी परिवारों के प्रचलन से कृषि भूमि पर बुरा असर पड़ा है। सम्मिलित परिवार की बड़ी भूमि इसी कारण छोटे छोटे टुकड़ों में बंट गई व छोटे तथा सीमान्त किसानों की संख्या में वृद्धि होने लगी। बहुत से पशुपालक भी अब छोटे एवं सीमान्त किसान ही हैं। उनके लिये छोटे खेतों में अलग से चारे के लिये स्थान सुनिश्चित करना मुश्किल हो जाता है। क्योंकि वो अनाजों, दालों तथा तिलहन आदि को अधिक महत्व देते हैं। एक सर्वेक्षण के आधार पर पाय गया है कि मांग का लगभग 50–70 प्रतिशत चारा ही (हरा एवं सूखा) अभी उपलब्ध है। इस कमी को पूरा करने के लिये कृषि योग्य भूमि की भारी कमी है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्य फसलों की मांग में भी तेजी से वृद्धि हुई है। जिसके कारण न केवल चारा योग्य भूमि में कमी हुई है बल्कि जंगलों, वन चरागाहों एवं जन चरागाहें आदि की भी भारी कमी आई है। इस तरह चारा उपलब्धता में कमी एवं प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में अधिकता आई है।

**किसानों की खराब आर्थिक स्थिति :**

किसानें की आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। प्रायः वो ऐसी फसलों को महत्व देते हैं जिनसे उन्हें अधिक लाभ हो। अतः चारा संबंधित तकनीकों को वे अधिक नहीं अपनाना चाहते हैं क्योंकि जानवरों से प्राप्त दूध एवं दुग्ध पदार्थों मांस, अण्डा, आदि से अभी भी सीधी रूप में किसानों को अधिक लाभ नहीं मिल रहा है।

गांवो में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या भी अशिक्षित बेरोजगारों की अपेक्षा बहुत ज्यादा है। पढ़े लिखे युवक खेती करने के बजाए नौकरी करना अधिक पसन्द करते हैं। जो कि कृषि के विकास के लिए अत्यन्त दुखद है। पढ़े लिखे लोगों की कृषि के प्रति उदासीनता के कारण नई–नई तकनीकों का प्रसार किसानों के मध्य ठीक से नहीं हो पा रहा है।

**सूखे एवं बाढ़ से क्षति :**

कृषि उत्पादन, चरागाह उत्पादन तथा पेयजल आदि की पूर्ति के लिये पर्याप्त वर्षा का होना अति आवश्यक है किन्तु सूखे के कारण फसलें एवं जानवरों दोनों को ही भारी नुकसान हो रहा है एवं इनकी उत्पादकता काफी हो गई है। सूखे की स्थिति प्रायः नदियों के किनारों, बेकार व बंजर भूमि, सड़कों के किनारे की भूमि पर चारा वृक्षों का रोपण करना चाहिए। सूखे चारे का उचित रूप से प्रयोग करना चाहिए। चारा संरक्षण संबंधी तकनीकों को अपनाना चाहिए। यूरिया मोलेसस–मिनरल ब्लाक का प्रयोग करना चाहिए। अनुपजाऊ व परती भूमि पर दलहनी चारा जैसे सुबबूल आदि को उगाना चाहिए।

चारे को संरक्षित करके इसे आसानी से बेल्स या फील ब्लाक रूप में अधिक उत्पादकता वाले क्षेत्रों से कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों को भेजा जा सकता है। किन्तु अभी ये तकनीक किसानों के मध्य प्रचलित नहीं है अधिक खर्च, मुष्किल विधि एंव तकनीक की अनुपलब्धता आदि इसके मुख्य कारण हैं।

**चारा तकनीक हस्तान्तरण की समस्यायें :**

ज्यादातर राज्यों में चारे से संबंधित योजनायें बनाना एवं उनका क्रियान्वयन आदि पशुपालन विभाग की जिम्मेदारी है। इन विभागों ने तकनीक हस्तान्तरण एवं उनके प्रचार प्रसार का कार्य पशु चिकित्सकों या पशु विज्ञान स्नातकों द्वारा किया जाता है। जबकि ये लोग ज्यादातर पशुनस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान एवं स्वास्थ सुधार आदि पर अधिक जोर देते जबकि चारा संबंधित तकनीकों के प्रसार पर कम ध्यान दिया जाता है। उच्च गुणवत्ता वाले चारा बीजों का भी प्रसार पर्याप्त किट एवं जानकारी न होने के कारण नहीं हो पाता है। सरकार द्वारा चारा फसलों के प्रदर्शन एवं मिनी किट आदि के बारे में सार्थक प्रयास न होने के कारण चारा तकनीकी हस्तान्तरण ठीक से नहीं हो पा रहा है।

**बाढ़ से क्षति :**

बाढ़ अथवा जल भराव वाले स्थानों में पशुधन सबसे अधिक प्रभावित होता है क्योंकि पशुओं को प्रतिदिन चारा अधिक मात्रा में चाहिए व चारा अधिक स्थान घेरता है एंव भंडारण की समस्या हो जाती है।

**क्या करें ?**

1. लाभकारी एवं अनुकूल देशी नस्ल के जानवर रखने चाहिए। इनके सांड का प्रयोग कृत्रिम गर्भाधान के लिए करना चाहिए।

2. पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिए जो कि स्थानीय उपलब्ध चारा फसलों एवं घासों के रूप में भलीभांति उपचारित करके करना चाहिए। इससे न केवल उनके स्वास्थ एवं दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती हे बल्कि उनका प्रजनन चक्र भी सही रहता है।
3. बेकार भूमि एवं सामुदायिक चरागाहों में स्टाइलो, बहुवर्षीय घासों एव सुबबूल आदि का रोपण करना चाहिए।
4. खुरपका–मुंहपका, गलघोटूं, फड़सूजा आदि बीमारियों से बचाने के लिए जानवरों का समय से टीकाकरण कराना चाहिए।
5. दुग्ध उत्पादकों को मिलकर कोआपरेटिव बना लेनी चाहिए। इससे उन्हें दुग्ध उत्पादन एंव उसकी बिक्री से सुविधा व अधिक लाभ देगा। तथा ग्राहकों को शुद्ध दूध मिलेगा।
6. गर्मी वाली चारा फसलों जैसे मक्का, बाजरा, ज्वार, लोबिया आदि को उगाना चाहिए।
7. बहुवर्षीय घासों को बण्ड पर लगाकर बीच–बीच में मौसमी चारा फसलें को लगाना चाहिए। इस प्रकार वर्ष भर चारा उत्पादन को अपनाना चाहिए।
8. निम्न गुणवत्ता वाले चारे को यूरिया द्वारा उपचारित कर लेना चाहिए।
9. साइलेज तथा हे बनाकर चारे को संरक्षित कर लेना चाहिए।
10. सुबबूल व स्टाइलो आदि की लीफमील बनाकर रखी जा सकती है।
11. पषुओं को ज्यादातर बांध कर खिलाना चाहिए या व्यवस्थित चराई करानी चाहिए।
12. कम समयावधि वाली चारा फसलों को अधिक लगाना चाहिए ।
13. अनुपजाऊ चरागाहों पर वन चरागाह लगाकर उनकी उत्पादकता को दोबारा बढ़ाया जा सकता है।
14. सूखे चारे के साथ दलहनी चारा एवं दाना अवश्य खिलाना चाहिए।
15. खेतों पर अधिकाधिक चारा प्रदर्शन होने चाहिए ताकि किसानों की इनमें पूर्ण भागीदारी रहे।
16. किसानों को कम एवं अच्छे जानवर रखने के लिये तथा छुट्टा जानवर न छोड़ने के लिये उन्हें शिक्षित करने, प्रसार एवं जन सहभागिता की अत्यधिक आवश्यकता होती है।